DAJE Volume 02 (1) 2026 [January-June]
Published on: 26 August, 2026

Received: 23 April, 2026 /Revised: 24 July, 2026/Accepted: 25 July, 2026

शोध एवं प्रकाशन नैतिकता के प्रति शोधार्थियों की जागरूकता, अनुपालन एवं संस्थागत अनुकूलता का अध्ययन

अनुपम मिश्र[1]
रमा कान्त सिंह[2]

शोध-सारांश

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में शोध एवं प्रकाशन नैतिकता का महत्व निरंतर बढ़ता जा रहा है, क्योंकि यह अकादमिक गुणवत्ता, विश्वसनीयता तथा शोध कार्यों की प्रामाणिकता सुनिश्चित करती है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य शोधार्थियों की शोध एवं प्रकाशन नैतिकता के प्रति जागरूकता, उनके द्वारा किए जाने वाले नैतिक अनुपालन तथा संस्थागत प्रभावशीलता का विश्लेषण करना है। इस अध्ययन में पाया गया कि अधिकांश शोधार्थी शोध नैतिकता के मूल सिद्धांतों, जैसे ईमानदारी, पारदर्शिता, उत्तरदायित्व तथा मौलिकता के प्रति सामान्यतः जागरूक हैं; किंतु उनके व्यावहारिक अनुपालन में अभी भी कमी परिलक्षित होती है। अध्ययन यह भी इंगित करता है कि विश्वविद्यालयों एवं उच्च शिक्षण संस्थानों में शोध नैतिकता समिति, साहित्यिक चोरी जाँच सॉफ्टवेयर तथा नैतिक दिशा निर्देशों- का प्रभावी क्रियान्वयन शोधार्थियों के व्यवहार को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। अतः आवश्यक है कि संस्थागत ढाँचे को और अधिक सुदृढ़ बनाया जाए तथा शोधार्थियों में नैतिक मूल्यों के प्रति जागरूकता एवं उनके अनुपालन की भावना का निरंतर विकास किया जाए। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि शोध एवं प्रकाशन नैतिकता के प्रति जागरूकता का स्तर निरंतर विकसित हो रहा है, किंतु इसके व्यावहारिक अनुपालन तथा संस्थागत प्रभावशीलता को और अधिक सुदृढ़ किए जाने की आवश्यकता है।

बीज शब्द: *शोध एवं प्रकाशन नैतिकता, शोधार्थी, साहित्यिक चोरी, संस्थागत प्रभावशीलता, उच्च शिक्षा, अकादमिक ईमानदारी, अनुसंधान गुणवत्ता।*

प्रस्तावना

उच्च शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान का संप्रेषण करना ही नहीं, बल्कि शोध, नवाचार तथा बौद्धिक विकास को प्रोत्साहित करना भी है। वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में उच्च शिक्षा संस्थानों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है, क्योंकि ये संस्थान न केवल मानव संसाधन का विकास करते हैं, बल्कि समाज के लिए नवीन ज्ञान के सृजन, तकनीकी प्रगति तथा नीति निर्माण में भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। इसी संदर्भ में शोध एवं प्रकाशन नैतिकता का महत्व- अत्यधिक बढ़ गया है, क्योंकि यह अकादमिक विश्वसनीयता, शोध की गुणवत्ता तथा ज्ञान की प्रामाणिकता सुनिश्चित करती है। वर्तमान समय में शोध प्रकाशनों की संख्या तीव्र गति से बढ़ रही है। इसके साथ ही उनसे संबंधित नैतिक चुनौतियाँ भी निरंतर बढ़ती जा रही हैं। साहित्यिक चोरी (प्लेगरिज़्म), आँकड़ों का मिथ्याकरण, अनुचित उद्धरण, स्वप्रकाशन का दुरुपयोग, सह लेखकता संबंधी विवाद तथा प्रकाशन का दबाव जैसी समस्याएँ शोध की मौलिकता एवं विश्वसनीयता पर प्रश्नचिह्न खड़े कर रही हैं। ऐसी स्थिति में शोध नैतिकता का पालन केवल एक औपचारिक

[1] शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी (उत्तर प्रदेश)
[2] प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी, (उत्तर प्रदेश)

Published by: Department of Education, Doctor Harisingh Gour Vishwavidyalaya, Sagar (MP)

आवश्यकता नहीं रह गया है, बल्कि यह अकादमिक ईमानदारी की आधारशिला बन चुका है। भारत सहित विश्व के अनेक देशों में उच्च शिक्षा संस्थानों पर शोध की गुणवत्ता में सुधार लाने का दबाव निरंतर बढ़ रहा है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने भी शोध एवं प्रकाशन में नैतिक (यूजीसी) मानकों को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से अनेक दिशानिर्देश जारी किए हैं-, जैसे यूजीसी केयर सूची, एंटी प्लेगरिज़्म नीति तथा शोध एवं प्रकाशन नैतिकता-संबंधी पाठ्यक्रम। इसके अतिरिक्त, डिजिटल युग में टर्नीटिन तथा आई थेंटिकेट-जैसे सॉफ्टवेयर का उपयोग शोध की मौलिकता की जाँच के लिए किया जा रहा है। इससे स्पष्ट होता है कि संस्थागत स्तर पर शोध नैतिकता को सुदृढ़ बनाने के प्रयास किए जा रहे हैं, फिर भी व्यावहारिक स्तर पर अनेक चुनौतियाँ विद्यमान हैं। वर्तमान समय में शोधार्थियों पर शोध पत्र प्रकाशित करने का अत्यधिक दबाव देखा-जाता है, जिसे "पब्लिश ऑर पेरिश" संस्कृति के रूप में जाना जाता है। यह प्रवृत्ति कई बार शोधार्थियों को गुणवत्ता की अपेक्षा मात्रा पर अधिक ध्यान देने के लिए प्रेरित करती है, जिससे नैतिक मानकों के उल्लंघन की संभावना बढ़ जाती है। विशेष रूप से नवोदित शोधार्थियों में शोध पद्धति की अपर्याप्त समझ, नैतिक प्रशिक्षण का अभाव तथा समुचित मार्गदर्शन की कमी इस समस्या को और अधिक जटिल बना देती है। इसके साथ ही डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता ने जहाँ एक ओर शोध को सरल एवं सुलभ बनाया है, वहीं दूसरी ओर अनुचित कॉपी पेस्ट की अनुचित प्रवृत्ति को भी बढ़ावा दिया है। इंटरनेट पर उपलब्ध विशाल मात्रा में जानकारी का उचित संदर्भ दिए बिना उपयोग करना आज एक सामान्य समस्या बन गया है, जो शोध की मौलिकता को प्रभावित करता है। शोध एवं प्रकाशन नैतिकता का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि प्रत्येक शोध कार्य ईमानदारी, पारदर्शिता, उत्तरदायित्व तथा मौलिकता के सिद्धांतों पर आधारित हो। इससे न केवल शोधकर्ता की व्यक्तिगत विश्वसनीयता में वृद्धि होती है, बल्कि संपूर्ण अकादमिक समुदाय की प्रतिष्ठा भी सुदृढ़ होती है। जब शोधार्थी नैतिक मानकों का पालन करते हैं, तब उनके द्वारा सृजित ज्ञान अधिक विश्वसनीय, उपयोगी तथा दीर्घकालिक प्रभाव उत्पन्न करने वाला होता है। इस संदर्भ में संस्थागत प्रभावशीलता की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि उच्च शिक्षा संस्थान शोध नैतिकता से संबंधित स्पष्ट नीतियाँ, प्रशिक्षण कार्यक्रम, कार्यशालाएँ तथा प्रभावी निगरानी तंत्र विकसित करें, तो शोधार्थियों के व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन देखा जा सकता है। उदाहरणस्वरूप, अनेक विश्वविद्यालयों ने शोध एवं प्रकाशन नैतिकता को अनिवार्य पाठ्यक्रम के रूप में सम्मिलित किया है, जिससे शोधार्थियों में प्रारंभिक स्तर से ही नैतिक मूल्यों का विकास हो सके। इसके अतिरिक्त, शोधनिर्देशक अथवा पर्यवेक्षक की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। एक प्रभावी शोध निर्देशक न केवल शोध पद्धति का-उचितमार्गदर्शन करता है, बल्कि शोधार्थी को नैतिक मूल्यों के प्रति भी जागरूक बनाता है। शोध प्रक्रिया के प्रत्येक चरण में समुचित मार्गदर्शन मिलने से साहित्यिक चोरी, आँकड़ों की भ्रामक प्रस्तुति तथा अनुचित प्रकाशन जैसी समस्याओं को काफी हद तक नियंत्रित किया जा सकता है। वर्तमान परिदृश्य में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी शोध नैतिकता को लेकर गंभीर प्रयास किए जा रहे हैं। कमिटी ऑन पब्लिकेशन एथिक्स (COPE) जैसे संगठन शोध एवं प्रकाशन में नैतिक मानकों के निर्धारण और उनके अनुपालन को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। विभिन्न अंतरराष्ट्रीय शोधपत्रों को प्रकाशित करने से पूर्व उनकी कठोर-पत्रिकाएँ शोध- नैतिक समीक्षा करती हैं। तथापि, इन सभी प्रयासों के बावजूद यह देखा गया है कि शोधार्थियों की नैतिक जागरूकता तथा उसके व्यावहारिक अनुपालन के बीच अभी भी पर्याप्त अंतर विद्यमान है। अनेक शोधार्थी नैतिक सिद्धांतों से सैद्धांतिक रूप से परिचित

CC BY

होते हैं, किंतु व्यवहार में उनका समुचित पालन नहीं कर पाते। इसके प्रमुख कारणों में नैतिक शिक्षा का अभाव, प्रतिस्पर्धात्मक दबाव तथा संस्थागत निगरानी की अपर्याप्तता सम्मिलित हैं। प्रस्तुत अध्ययन का महत्व इस तथ्य में निहित है कि यह शोधार्थियों की नैतिक जागरूकता, उनके वास्तविक अनुपालन व्यवहार तथा संस्थागत प्रभावशीलता के मध्य संबंधों का विश्लेषण करता है। यह अध्ययन इस बात को समझने में सहायता प्रदान करता है कि किस प्रकार संस्थागत संरचना तथा शैक्षिक वातावरण शोध एवं प्रकाशन नैतिकता को प्रभावित करते हैं। अतः कहा जा सकता है कि उच्च शिक्षा में शोध एवं प्रकाशन नैतिकता केवल एक अकादमिक अवधारणा नहीं है, बल्कि संपूर्ण ज्ञानव्यवस्था की विश्वसनीयता का आधार है। यदि इस क्षेत्र में प्रभावी सुधार किए जाएँ-, तो न केवल शोध की गुणवत्ता में वृद्धि होगी, बल्कि वैश्विक स्तर पर भारतीय उच्च शिक्षा की प्रतिष्ठा भी सुदृढ़ होगी। इसलिए वर्तमान समय की आवश्यकता है कि शोधार्थियों में नैतिक मूल्यों का सतत विकास किया जाए, संस्थागत नीतियों का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाए तथा शोध प्रक्रिया में पारदर्शिता, उत्तरदायित्व और ईमानदारी को सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान की जाए। यही एक सशक्त, विश्वसनीय एवं नैतिक मूल्यों से समृद्ध उच्च शिक्षा प्रणाली के निर्माण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम सिद्ध होगा।

अध्ययन की पृष्ठभूमि

उच्च शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य ज्ञान का सृजन, उसका विस्तार तथा समाज के लिए उपयोगी अनुसंधान का विकास करना है। वर्तमान समय में ज्ञान-आधारित समाज की अवधारणा ने शोध की भूमिका को और अधिक महत्वपूर्ण बना दिया है। इसी संदर्भ में शोध एवं प्रकाशन नैतिकता का प्रश्न अत्यंत प्रासंगिक हो गया है, क्योंकि यह न केवल शोध की गुणवत्ता को निर्धारित करती है, बल्कि अकादमिक ईमानदारी तथा संस्थागत विश्वसनीयता की आधारशिला भी है। विगत कुछ वर्षों में वैश्विक स्तर पर शोध प्रकाशनों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। डिजिटल प्रौद्योगिकी, ऑनलाइन शोध-पत्रिकाओं, मुक्त अभिगम प्रकाशन तथा ई-अधिगम संसाधनों ने शोध कार्य को अधिक सरल, सुलभ एवं व्यापक बना दिया है। किंतु इसके साथ ही अनुचित शोध व्यवहारों, जैसे—साहित्यिक चोरी (प्लेगरिज़्म), आँकड़ों का मिथ्याकरण, अनुचित उद्धरण तथा "पब्लिश ऑर पेरिश" संस्कृति में भी वृद्धि देखी गई है। यह प्रवृत्ति शोध की मौलिकता तथा विश्वसनीयता के लिए गंभीर चुनौती प्रस्तुत करती है। भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली भी इस परिवर्तन से अछूती नहीं रही है। विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में, विशेष रूप से पीएच.डी. स्तर पर, शोध गतिविधियों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। तथापि, यह भी देखा गया है कि अनेक शोधार्थी शोध पद्धति तथा नैतिक मानकों की समुचित समझ के बिना ही शोध कार्य में संलग्न हो जाते हैं। इसके परिणामस्वरूप अनेक शोध-पत्रों में मौलिकता का अभाव, संदर्भों का अनुचित उपयोग तथा नैतिक उल्लंघन के मामले सामने आते हैं। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा अन्य नियामक संस्थाओं ने शोध नैतिकता को सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से अनेक महत्वपूर्ण पहलें की हैं, जैसे—यूजीसी-केयर सूची, प्लेगरिज़्म जाँच नीति तथा शोध एवं प्रकाशन नैतिकता संबंधी पाठ्यक्रमों का समावेश। इसके साथ ही टर्नीटिन तथा आई-थेंटिकेट जैसे सॉफ्टवेयरों के उपयोग को भी प्रोत्साहित किया गया है, ताकि शोध की गुणवत्ता और मौलिकता सुनिश्चित की जा सके। इसके बावजूद, व्यवहारिक स्तर पर शोधार्थियों की नैतिक जागरूकता तथा उसके अनुपालन में पर्याप्त अंतर देखा जाता है। संस्थागत स्तर पर भी यह पाया गया है कि अनेक उच्च शिक्षण संस्थानों में शोध नैतिकता से संबंधित प्रशिक्षण कार्यक्रमों, कार्यशालाओं तथा प्रभावी निगरानी

तंत्र का अभाव है। इस संदर्भ में शोध-निर्देशकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि वे शोधार्थियों को केवल शोध-पद्धति का तकनीकी ज्ञान ही नहीं प्रदान करते, बल्कि उन्हें नैतिक मूल्यों के प्रति भी जागरूक करते हैं। यदि शोध-निर्देशन प्रभावी न हो, तो शोध प्रक्रिया में नैतिक विचलन की संभावना बढ़ जाती है। इसके अतिरिक्त, वैश्वीकरण एवं तीव्र प्रतिस्पर्धा के वर्तमान युग में शोध प्रकाशन को अकादमिक उन्नति तथा व्यावसायिक विकास का प्रमुख आधार माना जाने लगा है। इस दबाव के कारण अनेक शोधार्थी शीघ्र प्रकाशन की प्रतिस्पर्धा में गुणवत्ता की अपेक्षा मात्रा को अधिक महत्व देने लगते हैं, जिसके परिणामस्वरूप शोध नैतिकता के सिद्धांतों के उल्लंघन की संभावना बढ़ जाती है। यह स्थिति शोध एवं प्रकाशन नैतिकता के लिए गंभीर चुनौती बन चुकी है। अतः स्पष्ट है कि उच्च शिक्षा में शोध एवं प्रकाशन नैतिकता का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि यह शोधार्थियों की नैतिक जागरूकता, उनके व्यावहारिक अनुपालन तथा संस्थागत प्रभावशीलता के मध्य संबंधों को समझने में सहायक सिद्ध होता है। इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन किया जा रहा है, जिससे वर्तमान उच्च शिक्षा परिदृश्य में शोध एवं प्रकाशन नैतिकता की स्थिति का समग्र विश्लेषण किया जा सके तथा इस क्षेत्र में सुधार हेतु उपयोगी सुझाव प्रस्तुत किए जा सकें।

शोध की आवश्यकता

वर्तमान उच्च शिक्षा प्रणाली निरंतर परिवर्तन के दौर से गुजर रही है, जहाँ ज्ञान के सृजन, प्रसार तथा उपयोग में शोध की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है। वैश्वीकरण, डिजिटलीकरण तथा सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास ने शोध कार्यों को अधिक सुलभ बना दिया है, किंतु इसके साथ ही शोध एवं प्रकाशन से संबंधित नैतिक चुनौतियाँ भी बढ़ी हैं। ऐसे परिदृश्य में शोध एवं प्रकाशन नैतिकता का पालन अत्यावश्यक हो गया है, ताकि अकादमिक विश्वसनीयता तथा शोध की गुणवत्ता सुनिश्चित की जा सके। वर्तमान समय में "पब्लिश ऑर पेरिश" की प्रवृत्ति ने शोधार्थियों पर अत्यधिक दबाव उत्पन्न कर दिया है। इस दबाव के कारण अनेक शोधार्थी गुणवत्ता की अपेक्षा शोध-प्रकाशनों की संख्या पर अधिक ध्यान देने लगते हैं, जिसके परिणामस्वरूप साहित्यिक चोरी (प्लेगरिज़्म), आँकड़ों में हेरफेर, अनुचित उद्धरण तथा द्वितीयक स्रोतों पर अत्यधिक निर्भरता जैसी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। यह स्थिति न केवल व्यक्तिगत शोध की गुणवत्ता को प्रभावित करती है, बल्कि संपूर्ण उच्च शिक्षा प्रणाली की विश्वसनीयता पर भी प्रश्नचिह्न लगाती है। इसके अतिरिक्त, डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता ने जहाँ एक ओर शोध कार्य को सरल एवं सुलभ बनाया है, वहीं दूसरी ओर उचित संदर्भ एवं नैतिक मानकों का पालन किए बिना सामग्री के उपयोग तथा अनुचित कॉपी-पेस्ट की प्रवृत्ति को भी बढ़ावा दिया है। परिणामस्वरूप, शोध की मौलिकता प्रभावित होती है और अकादमिक ईमानदारी कमजोर पड़ती है। अतः यह आवश्यक है कि शोधार्थियों में शोध एवं प्रकाशन नैतिकता के प्रति गहन जागरूकता विकसित की जाए। भारत सहित विश्व के अनेक देशों में उच्च शिक्षा संस्थानों ने शोध नैतिकता को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से विभिन्न नीतियाँ एवं दिशा-निर्देश लागू किए हैं, जैसे—यूजीसी-केयर सूची, प्लेगरिज़्म जाँच प्रणाली तथा शोध एवं प्रकाशन नैतिकता संबंधी पाठ्यक्रम। तथापि, इन नीतियों का वास्तविक प्रभाव तभी दिखाई देगा, जब शोधार्थी न केवल इनके प्रति जागरूक होंगे, बल्कि व्यवहार में भी उनका समुचित अनुपालन करेंगे। इस संदर्भ में यह जानना आवश्यक है कि शोधार्थियों की वास्तविक जागरूकता तथा नैतिक अनुपालन की वर्तमान स्थिति क्या है। इसके साथ ही, संस्थागत प्रभावशीलता भी एक महत्वपूर्ण कारक है।

यदि उच्च शिक्षण संस्थान शोध नैतिकता से संबंधित प्रशिक्षण कार्यक्रमों, कार्यशालाओं, प्रभावी मार्गदर्शन तथा सुदृढ़ निगरानी तंत्र को व्यवस्थित रूप से लागू करें, तो शोध व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन संभव है। अतः यह जानना भी आवश्यक है कि संस्थागत प्रयास किस सीमा तक शोध एवं प्रकाशन नैतिकता को प्रभावित कर रहे हैं। वर्तमान समय में अनेक शोधार्थी शोध नैतिकता के सिद्धांतों से सैद्धांतिक रूप से परिचित होते हैं, किंतु व्यवहार में उनका समुचित पालन नहीं कर पाते। यह अंतर एक गंभीर समस्या है, जिसे समझना तथा दूर करना अत्यंत आवश्यक है। इसी अंतर की पहचान करने तथा उसका विश्लेषण करने के उद्देश्य से प्रस्तुत अध्ययन किया जा रहा है। अतः स्पष्ट है कि उच्च शिक्षा में शोध एवं प्रकाशन नैतिकता पर आधारित यह अध्ययन न केवल वर्तमान समस्याओं को उजागर करता है, बल्कि भविष्य में शोध की गुणवत्ता में सुधार हेतु आवश्यक दिशा भी प्रदान करता है। यह अध्ययन शोधार्थियों की नैतिक जागरूकता, उनके व्यावहारिक अनुपालन तथा संस्थागत प्रभावशीलता के मध्य संबंधों को समझने में सहायक सिद्ध होगा, जिससे एक सुदृढ़, पारदर्शी एवं नैतिक मूल्यों पर आधारित शोध वातावरण के निर्माण का मार्ग प्रशस्त होगा।

साहित्य समीक्षा

उच्च शिक्षा में शोध एवं प्रकाशन नैतिकता का विषय वर्तमान समय में अत्यंत महत्वपूर्ण हो गया है, क्योंकि यह न केवल शोध की गुणवत्ता को निर्धारित करती है, बल्कि संपूर्ण अकादमिक व्यवस्था की विश्वसनीयता को भी प्रभावित करती है। विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि शोध नैतिकता के प्रति जागरूकता में धीरे-धीरे वृद्धि हो रही है, किंतु उसके व्यावहारिक अनुपालन में अभी भी अनेक चुनौतियाँ विद्यमान हैं।

सिंह एवं कुमार, (2019) ने भारतीय विश्वविद्यालयों में शोध नैतिकता पर किए गए अध्ययन में निष्कर्ष निकाला कि शोधार्थी सामान्यतः साहित्यिक चोरी (प्लेगरिज़्म) तथा शोध नैतिकता के मूल सिद्धांतों से परिचित हैं, किंतु व्यावहारिक स्तर पर उनका अपेक्षित अनुपालन नहीं कर पाते। उन्होंने यह भी पाया कि शोध-निर्देशन की गुणवत्ता तथा संस्थागत वातावरण शोध नैतिकता को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि केवल सैद्धांतिक ज्ञान पर्याप्त नहीं है, बल्कि व्यावहारिक प्रशिक्षण भी अनिवार्य है। इसी प्रकार, गुप्ता, (2020) ने अपने अध्ययन में "पब्लिश ऑर पेरिश" संस्कृति के प्रभाव का विश्लेषण करते हुए पाया कि शोधार्थियों पर प्रकाशन का अत्यधिक दबाव उन्हें कई बार नैतिक मानकों से विचलित कर देता है। इसके परिणामस्वरूप शोध की गुणवत्ता प्रभावित होती है तथा साहित्यिक चोरी (प्लेगरिज़्म) जैसी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। यह अध्ययन वर्तमान शोध की उस धारणा का समर्थन करता है, जिसके अनुसार नैतिक अनुपालन का स्तर अपेक्षाकृत कम पाया गया है। शर्मा एवं वर्मा, (2021) के अध्ययन में यह पाया गया कि भारत में शोधार्थियों में साहित्यिक चोरी (प्लेगरिज़्म) के प्रति जागरूकता का स्तर 60 प्रतिशत से अधिक है, किंतु केवल लगभग 40 प्रतिशत शोधार्थी ही नैतिक मानकों का कठोरता से पालन करते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि जागरूकता तथा व्यावहारिक अनुपालन के बीच एक स्पष्ट अंतर विद्यमान है, जिसे दूर किए जाने की आवश्यकता है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, कमिटी ऑन पब्लिकेशन एथिक्स (COPE, 2021) की रिपोर्ट में शोध नैतिकता के प्रमुख सिद्धांतों, जैसे—पारदर्शिता, उत्तरदायित्व, निष्पक्षता तथा मौलिकता—को अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है। रिपोर्ट में यह भी उल्लेख किया गया है कि वैश्विक स्तर पर नैतिक उल्लंघनों की घटनाएँ पूर्णतः समाप्त नहीं हुई हैं, बल्कि वे विभिन्न रूपों में अब भी विद्यमान हैं। इससे स्पष्ट होता है

CC BY

कि शोध नैतिकता एक वैश्विक चुनौती है। अवस्थी एवं त्रिपाठी, (2022) ने भारतीय विश्वविद्यालयों में एंटी-प्लेगरिज़्म सॉफ्टवेयर के उपयोग पर किए गए अध्ययन में पाया कि यद्यपि इन तकनीकी उपकरणों का उपयोग बढ़ा है, फिर भी सभी संस्थानों में उनका समान रूप से प्रभावी उपयोग नहीं हो रहा है। यह अध्ययन संस्थागत प्रभावशीलता की भूमिका को रेखांकित करता है तथा यह दर्शाता है कि तकनीकी उपायों के साथ-साथ प्रशासनिक प्रतिबद्धता और प्रभावी क्रियान्वयन भी आवश्यक हैं। जॉनसन एवं अन्य (2023) के अंतरराष्ट्रीय अध्ययन में यह पाया गया कि शोधार्थियों का नैतिक व्यवहार मुख्यतः संस्थागत संस्कृति तथा शोध-निर्देशन की गुणवत्ता पर निर्भर करता है। जिन संस्थानों में नैतिक प्रशिक्षण तथा निगरानी व्यवस्था अधिक प्रभावी थी, वहाँ शोध नैतिकता के उल्लंघन की घटनाएँ अपेक्षाकृत कम पाई गईं। यह अध्ययन संस्थागत प्रभावशीलता को शोध नैतिकता का एक महत्वपूर्ण निर्धारक कारक सिद्ध करता है। इसके अतिरिक्त, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (2023) की रिपोर्ट में स्पष्ट किया गया है कि भारत में शोध एवं प्रकाशन नैतिकता संबंधी पाठ्यक्रम लागू किए जाने से शोधार्थियों की जागरूकता में सुधार हुआ है, किंतु व्यावहारिक अनुपालन के स्तर में अभी भी अपेक्षित सुधार की आवश्यकता है। रिपोर्ट यह भी इंगित करती है कि नीतिगत हस्तक्षेप तभी प्रभावी सिद्ध होंगे, जब उनका संस्थागत स्तर पर समुचित एवं प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाएगा।

संपूर्ण साहित्य के विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि शोध एवं प्रकाशन नैतिकता के क्षेत्र में जागरूकता का स्तर निरंतर बढ़ रहा है, किंतु नैतिक अनुपालन अभी भी एक प्रमुख चुनौती बना हुआ है। साथ ही, यह भी स्पष्ट होता है कि संस्थागत प्रभावशीलता शोध नैतिकता को सकारात्मक रूप से प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है। अतः यह आवश्यक है कि उच्च शिक्षा संस्थानों में नैतिक प्रशिक्षण, प्रभावी शोध-निर्देशन तथा सुदृढ़ निगरानी तंत्र को और अधिक विकसित किया जाए, ताकि शोध की गुणवत्ता, विश्वसनीयता तथा अकादमिक ईमानदारी को सुदृढ़ बनाया जा सके। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में शोध एवं प्रकाशन कार्यों की संख्या में तीव्र वृद्धि के साथ-साथ शोध की गुणवत्ता तथा नैतिक मानकों से संबंधित चुनौतियाँ भी निरंतर बढ़ रही हैं। वर्तमान समय में शोधार्थियों पर अकादमिक उन्नति, व्यावसायिक विकास तथा संस्थागत अपेक्षाओं को पूरा करने का अत्यधिक दबाव है, जिसके परिणामस्वरूप अनेक बार शोध कार्यों में नैतिक सिद्धांतों का समुचित पालन नहीं हो पाता। साहित्यिक चोरी (प्लेगरिज़्म), आँकड़ों की भ्रामक अथवा अनियमित प्रस्तुति, अनुचित उद्धरण, स्व-प्रकाशन का दुरुपयोग तथा "पब्लिश ऑर पेरिश" जैसी प्रवृत्तियाँ शोध की मौलिकता तथा विश्वसनीयता पर गंभीर प्रश्नचिह्न खड़े करती हैं। यद्यपि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) तथा अन्य नियामक संस्थाओं द्वारा शोध एवं प्रकाशन नैतिकता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से विभिन्न दिशा-निर्देश, नीतियाँ तथा प्लेगरिज़्म जाँच प्रणाली लागू की गई हैं, तथापि यह स्पष्ट नहीं है कि इन प्रयासों का वास्तविक प्रभाव शोधार्थियों की नैतिक जागरूकता तथा उनके व्यावहारिक अनुपालन पर किस सीमा तक पड़ रहा है। साथ ही, यह भी देखा गया है कि अनेक शोधार्थी शोध नैतिकता के सिद्धांतों से परिचित होने के बावजूद उनका व्यावहारिक रूप से पूर्णतः पालन नहीं करते। इसके अतिरिक्त, उच्च शिक्षा संस्थानों में शोध एवं प्रकाशन नैतिकता से संबंधित प्रशिक्षण कार्यक्रमों, कार्यशालाओं तथा शोध-निर्देशन की प्रभावशीलता भी सभी संस्थानों में समान रूप से सुनिश्चित नहीं है। कुछ संस्थानों में ये व्यवस्थाएँ सुदृढ़ एवं प्रभावी हैं, जबकि अन्य संस्थानों में उनका

क्रियान्वयन अपेक्षाकृत कमजोर पाया जाता है। इस असमानता के कारण संस्थागत प्रभावशीलता का शोध एवं प्रकाशन नैतिकता पर वास्तविक प्रभाव स्पष्ट रूप से निर्धारित नहीं हो पाता।

शोध प्रश्न

प्रस्तुत अध्ययन के संदर्भ में निम्नलिखित प्रमुख शोध प्रश्न निर्धारित किए गए हैं—

1. उच्च शिक्षा में शोधार्थियों की शोध एवं प्रकाशन नैतिकता के प्रति जागरूकता की वर्तमान स्थिति क्या है?
2. शोधार्थी शोध एवं प्रकाशन नैतिकता के सिद्धांतों, जैसे—ईमानदारी, मौलिकता, पारदर्शिता तथा उत्तरदायित्व का व्यावहारिक रूप से किस सीमा तक अनुपालन करते हैं?
3. उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा शोध एवं प्रकाशन नैतिकता को सुदृढ़ करने हेतु अपनाई गई नीतियों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों तथा निगरानी तंत्र की प्रभावशीलता का स्तर क्या है?
4. शोधार्थियों की शोध एवं प्रकाशन नैतिकता के प्रति जागरूकता, उनके व्यावहारिक अनुपालन तथा संस्थागत प्रभावशीलता के मध्य किस प्रकार का संबंध विद्यमान है?

शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के शोध प्रश्नों के आधार पर निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं –

1. उच्च शिक्षा में शोधार्थियों की शोध एवं प्रकाशन नैतिकता के प्रति जागरूकता के स्तर का अध्ययन करना।
2. शोधार्थियों द्वारा शोध एवं प्रकाशन नैतिकता के सिद्धांतों, जैसे—ईमानदारी, मौलिकता, पारदर्शिता तथा उत्तरदायित्व के व्यावहारिक अनुपालन की सीमा का विश्लेषण करना।
3. उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा शोध एवं प्रकाशन नैतिकता को सुदृढ़ करने हेतु अपनाई गई नीतियों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों तथा निगरानी तंत्र की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना।
4. शोधार्थियों की शोध एवं प्रकाशन नैतिकता के प्रति जागरूकता, उनके व्यावहारिक अनुपालन तथा संस्थागत प्रभावशीलता के मध्य संबंध का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्यों एवं शोध प्रश्नों के आधार पर निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाएँ निर्धारित की गई हैं—

1. H_{01}: उच्च शिक्षा में शोधार्थियों की शोध एवं प्रकाशन नैतिकता के प्रति जागरूकता का स्तर संतोषजनक नहीं है।
2. H_{02}: शोधार्थी शोध एवं प्रकाशन नैतिकता के सिद्धांतों, जैसे—ईमानदारी, मौलिकता, पारदर्शिता तथा उत्तरदायित्व का व्यावहारिक अनुपालन पर्याप्त स्तर पर नहीं करते हैं।
3. H_{03}: उच्च शिक्षण संस्थानों द्वारा शोध एवं प्रकाशन नैतिकता को सुदृढ़ करने हेतु अपनाई गई नीतियों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों तथा निगरानी तंत्र की प्रभावशीलता उल्लेखनीय नहीं है।
4. H_{04}: शोधार्थियों की शोध एवं प्रकाशन नैतिकता के प्रति जागरूकता, उनके व्यावहारिक अनुपालन तथा संस्थागत प्रभावशीलता के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं है।

CC BY

DAJE Volume 02 (1) 2026 [January-June]
Published on: 26 August, 2026

शोध अभिकल्प

अनुसंधान विधि - प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। यह विधि वर्तमान स्थिति का यथार्थ एवं वस्तुनिष्ठ चित्र प्रस्तुत करने के लिए उपयुक्त मानी जाती है। इसके माध्यम से शोधार्थियों की शोध एवं प्रकाशन नैतिकता के प्रति जागरूकता, उनके व्यावहारिक अनुपालन तथा संस्थागत प्रभावशीलता का व्यवस्थित अध्ययन किया गया है।

जनसंख्या एवं प्रतिदर्श चयन - प्रस्तुत अध्ययन में वाराणसी जनपद के समस्त विश्वविद्यालयों एवं उच्च शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत शोधार्थियों को अध्ययन की जनसंख्या के रूप में चिह्नित किया गया है। प्रतिदर्श के चयन हेतु यादृच्छिक स्तरीकृत प्रतिदर्श चयन विधि का प्रयोग किया गया, जिससे विभिन्न विषय-समूहों तथा संस्थानों का संतुलित एवं प्रतिनिधिक चयन सुनिश्चित किया जा सके।

प्रतिदर्श - प्रस्तुत अध्ययन के लिए कुल 200 शोधार्थियों का प्रतिदर्श चयन किया गया है। इसमें कला, विज्ञान, वाणिज्य, शिक्षा तथा सामाजिक विज्ञान जैसे विभिन्न विषय-क्षेत्रों के शोधार्थियों को सम्मिलित किया गया है, ताकि अध्ययन अधिक व्यापक, प्रतिनिधिक एवं तुलनात्मक बन सके।

उपकरण - आँकड़ों के संग्रहण हेतु शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित एक संरचित प्रश्नावली का उपयोग किया गया है। यह प्रश्नावली तीन प्रमुख आयामों पर आधारित है— (i) शोध एवं प्रकाशन नैतिकता के प्रति जागरूकता, (ii) नैतिक सिद्धांतों का व्यावहारिक अनुपालन तथा (iii) संस्थागत प्रभावशीलता।

सांख्यिकीय विश्लेषण - प्रस्तुत अध्ययन में संग्रहीत आँकड़ों के विश्लेषण हेतु प्रतिशत विश्लेषण, माध्य, मानक विचलन, सहसंबंध गुणांक तथा टी-परीक्षण (t-test) जैसी सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है। इन विधियों के माध्यम से शोधार्थियों की शोध एवं प्रकाशन नैतिकता के प्रति जागरूकता, उनके व्यावहारिक अनुपालन तथा संस्थागत प्रभावशीलता के मध्य संबंधों का वैज्ञानिक विश्लेषण किया गया है।

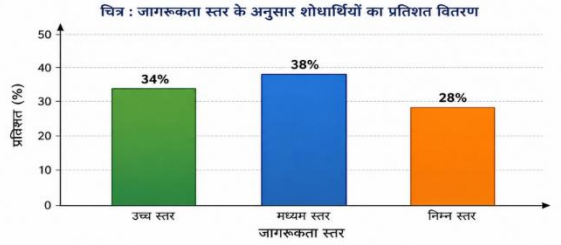
उपर्युक्त उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं के आधार पर सांख्यिकीय विश्लेषण तथा सारणियों का क्रमवार प्रस्तुतीकरण निम्नलिखित है -

सारणी–1 : शोध एवं प्रकाशन नैतिकता के प्रति शोधार्थियों की जागरूकता का स्तर

जागरूकता स्तर के अनुसार शोधार्थियों का वितरण (N = 200)

जागरूकता स्तर	आवृत्ति (f)	प्रतिशत (%)
उच्च स्तर	68	34%
मध्यम स्तर	76	38%
निम्न स्तर	56	28%
कुल	**200**	**100%**

चित्र : जागरूकता स्तर के अनुसार शोधार्थियों का प्रतिशत वितरण



विश्लेषण - प्रस्तुत सारणी से स्पष्ट होता है कि अधिकांश शोधार्थियों (72 %) में शोध एवं प्रकाशन नैतिकता के प्रति जागरूकता का स्तर मध्यम से उच्च है, जबकि 28% शोधार्थियों में जागरूकता का स्तर निम्न पाया गया। इससे

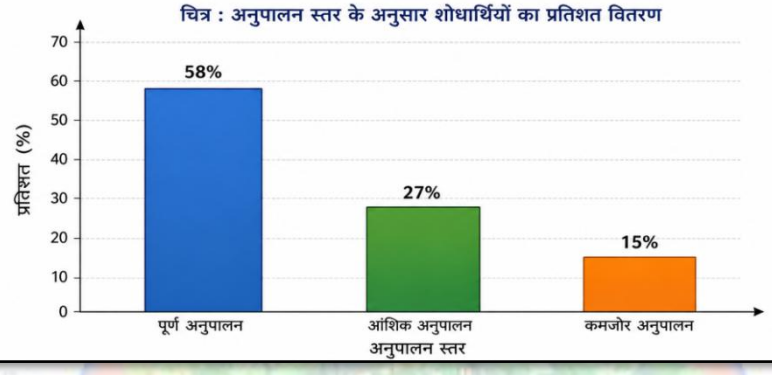
यह संकेत मिलता है कि अधिकांश शोधार्थी शोध एवं प्रकाशन नैतिकता के प्रति पर्याप्त रूप से जागरूक हैं, तथापि एक उल्लेखनीय वर्ग में जागरूकता का स्तर अभी भी अपेक्षाकृत कम है।

सारणी–2 : शोध एवं प्रकाशन नैतिकता के अनुपालन का स्तर

अनुपालन स्तर के अनुसार शोधार्थियों का वितरण (N = 200)

अनुपालन स्तर	आवृत्ति (f)	प्रतिशत (%)
पूर्ण अनुपालन	116	58%
आंशिक अनुपालन	54	27%
कमजोर अनुपालन	30	15%
कुल	**200**	**100%**

चित्र : अनुपालन स्तर के अनुसार शोधार्थियों का प्रतिशत वितरण



विश्लेषण - प्रस्तुत सारणी से स्पष्ट होता है कि केवल 58% शोधार्थी शोध एवं प्रकाशन नैतिकता के मानकों का पूर्ण रूप से अनुपालन करते हैं, जबकि 42% शोधार्थियों में आंशिक अथवा कमजोर अनुपालन पाया गया। इससे यह संकेत मिलता है कि यद्यपि अधिकांश शोधार्थी नैतिक मानकों का पालन करते हैं, तथापि एक उल्लेखनीय प्रतिशत अभी भी उनका पूर्णतः अनुपालन नहीं कर रहा है। अतः शोधार्थियों में नैतिक अनुपालन को सुदृढ़ बनाने के लिए प्रभावी प्रशिक्षण, सतत मार्गदर्शन तथा संस्थागत निगरानी को और अधिक सशक्त बनाए जाने की आवश्यकता है।

सारणी–3 : शोध एवं प्रकाशन नैतिकता के प्रति जागरूकता, नैतिक अनुपालन तथा संस्थागत प्रभावशीलता का स्तर माध्य एवं मानक विचलन सहित

संस्थागत स्तर	संस्थानों की संख्या	चर			प्रभावशीलता (%)
		शोध नैतिकता जागरूकता	नैतिक अनुपालन	संस्थागत प्रभावशीलता	
विश्वविद्यालय	5	माध्य 3.62 मानक विचलन 0.84	माध्य 3.28 मानक विचलन 0.91	माध्य 3.74 मानक विचलन 0.79	75%
डिग्री कॉलेज	12				65%
महाविद्यालय	18				55%

CC BY

DAJE Volume 02 (1) 2026 [January-June]
Published on: 26 August, 2026

विश्लेषण - प्रस्तुत सारणी से स्पष्ट होता है कि विश्वविद्यालय स्तर पर संस्थागत प्रभावशीलता का स्तर 75 प्रतिशत है, जो अपेक्षाकृत उच्च प्रभावशीलता को दर्शाता है। डिग्री कॉलेज स्तर पर संस्थागत प्रभावशीलता का स्तर 65 प्रतिशत पाया गया, जो संतोषजनक स्थिति का संकेत देता है। वहीं, महाविद्यालय स्तर पर संस्थागत प्रभावशीलता का स्तर 55 प्रतिशत पाया गया, जो अन्य दोनों स्तरों की तुलना में अपेक्षाकृत कम है। निष्कर्षतः, तीनों स्तरों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि संस्थागत प्रभावशीलता का माध्य सर्वाधिक (3.74) पाया गया, जो उच्च शिक्षण संस्थानों में शोध एवं प्रकाशन नैतिकता के संबंध में अपेक्षाकृत सकारात्मक एवं संतोषजनक स्थिति को दर्शाता है।

सारणी–4 : अध्ययन के चरों के मध्य सहसंबंध तथा संस्थागत स्तर के आधार पर टी- परीक्षण का संयुक्त विश्लेषण

सांख्यिकीय परीक्षण	विवरण	जागरूकता	अनुपालन	संस्थागत प्रभावशीलता	N (संख्या)	माध्य	SD	टी-परीक्षण	सार्थकता स्तर
सहसंबंध	शोध नैतिकता जागरूकता	1	0.58**	0.64**	–	–	–	–	0.01
	नैतिक अनुपालन	0.58**	1	0.60**	–	–	–	–	0.01
	संस्थागत प्रभावशीलता	0.64**	0.60**	1	–	–	–	–	0.01
टी.-परीक्षण	विश्वविद्यालय	–	–	–	80	3.80	0.70	3.92	0.01
	महाविद्यालय	–	–	–	120	3.35	0.88		

विश्लेषण

प्रस्तुत सारणी से स्पष्ट होता है कि अध्ययन में सम्मिलित चरों के मध्य धनात्मक तथा सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक संबंध विद्यमान है। शोध एवं प्रकाशन नैतिकता के प्रति जागरूकता तथा नैतिक अनुपालन के मध्य 0.58, शोध एवं प्रकाशन नैतिकता के प्रति जागरूकता तथा संस्थागत प्रभावशीलता के मध्य 0.64, तथा नैतिक अनुपालन एवं संस्थागत प्रभावशीलता के मध्य 0.60 का सहसंबंध गुणांक प्राप्त हुआ, जो 0.01 के सार्थकता स्तर पर सांख्यिकीय रूप से सार्थक है। इससे स्पष्ट होता है कि शोध एवं प्रकाशन नैतिकता के प्रति जागरूकता में वृद्धि होने पर नैतिक अनुपालन तथा संस्थागत प्रभावशीलता में भी सकारात्मक वृद्धि होती है। इसके अतिरिक्त, संस्थागत स्तर के आधार पर किए गए स्वतंत्र नमूना टी परीक्षण से ज्ञात हुआ कि विश्वविद्यालय समूह (N = 80, M = 3.80, SD = 0.70) तथा महाविद्यालय समूह (N = 120, M = 3.35, SD = 0.88) के मध्य प्राप्त टी मूल्य t = 3.92), 0.01 के सार्थकता स्तर पर सांख्यिकीय रूप से सार्थक है। इससे स्पष्ट होता है कि दोनों समूहों के मध्य अध्ययन किए गए चरों के संबंध में वास्तविक एवं महत्वपूर्ण अंतर विद्यमान है तथा विश्वविद्यालय समूह का औसत स्तर महाविद्यालय समूह की अपेक्षा अधिक है। अतः समग्र रूप से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अध्ययन के प्रमुख चर परस्पर

CC BY

धनात्मक एवं सांख्यिकीय रूप से सार्थक संबंध रखते हैं तथा संस्थागत स्तर के आधार पर उनमें सांख्यिकीय दृष्टि से महत्वपूर्ण अंतर भी पाया जाता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि अधिकांश शोधार्थियों में शोध एवं प्रकाशन नैतिकता के प्रति मध्यम से उच्च स्तर की जागरूकता विद्यमान है, तथापि एक उल्लेखनीय संख्या में शोधार्थियों का जागरूकता स्तर अभी भी निम्न पाया गया। नैतिक अनुपालन के संदर्भ में यह ज्ञात हुआ कि सभी शोधार्थी नैतिक मानकों का पूर्णतः अनुपालन नहीं करते हैं, जिससे इस क्षेत्र में अधिक प्रभावी प्रशिक्षण, मार्गदर्शन तथा सतत निगरानी की आवश्यकता परिलक्षित होती है। संस्थागत स्तर पर विश्वविद्यालयों की प्रभावशीलता सर्वाधिक, डिग्री कॉलेजों की प्रभावशीलता संतोषजनक तथा महाविद्यालयों की प्रभावशीलता अपेक्षाकृत कम पाई गई। माध्य एवं मानक विचलन के विश्लेषण से यह भी स्पष्ट हुआ कि संस्थागत प्रभावशीलता का माध्य सर्वाधिक (3.74) प्राप्त हुआ, जो अध्ययन की सकारात्मक एवं संतोषजनक स्थिति को दर्शाता है। सहसंबंध विश्लेषण से यह सिद्ध हुआ कि शोध एवं प्रकाशन नैतिकता के प्रति जागरूकता, नैतिक अनुपालन तथा संस्थागत प्रभावशीलता के मध्य धनात्मक एवं 0.01 के सार्थकता स्तर पर सांख्यिकीय रूप से सार्थक संबंध विद्यमान है। इससे स्पष्ट होता है कि शोध एवं प्रकाशन नैतिकता के प्रति जागरूकता में वृद्धि होने पर नैतिक अनुपालन तथा संस्थागत प्रभावशीलता में भी सकारात्मक वृद्धि होती है। इसके अतिरिक्त, स्वतंत्र नमूना टी परीक्षण के परिणामों से विश्वविद्यालय तथा महाविद्यालय समूहों के मध्य सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर प्राप्त हुआ। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि संस्थागत स्तर अध्ययन के प्रमुख चरों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है। अंततः यह अध्ययन प्रमाणित करता है कि शोध एवं प्रकाशन नैतिकता के प्रति जागरूकता, नैतिक अनुपालन तथा संस्थागत प्रभावशीलता परस्पर घनिष्ठ रूप से संबद्ध हैं। इन तीनों का सुदृढ़ीकरण उच्च गुणवत्ता वाले शोध, नैतिक अनुसंधान संस्कृति तथा संस्थागत उत्कृष्टता के विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर विश्वविद्यालयों व महाविद्यालयों हेतु निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए जा सकते हैं -

1. सभी उच्च शिक्षण संस्थानों में शोध एवं प्रकाशन नैतिकता से संबंधित प्रशिक्षण कार्यक्रमों को अनिवार्य बनाया जाए।
2. शोधार्थियों के लिए प्लेगरिज्म जाँच (टर्नइटिन और आईथेंटिकेट) को अनिवार्य रूप से लागू किया जाए।
3. शोधमार्गदर्शकों एवं पर्यवेक्षकों की भूमिका को अधिक प्रभावी एवं उत्तरदायी बनाया जाए।-
4. शोध एवं प्रकाशन नैतिकता से संबंधित सेमिनार, कार्यशालाओं तथा अभिमुखीकरण (ओरिएंटेशन) कार्यक्रमों का नियमित आयोजन किया जाए।
5. नैतिक उल्लंघनों की रोकथाम हेतु स्पष्ट, पारदर्शी तथा प्रभावी दंडात्मक एवं सुधारात्मक नीतियों का निर्माण एवं उनका कठोरता से अनुपालन सुनिश्चित किया जाए।

अध्ययन का परिसीमन

प्रस्तुत अध्ययन निम्नलिखित सीमाओं तक परिसीमित किया गया है—

1. यह अध्ययन केवल उत्तर प्रदेश के वाराणसी जनपद के उच्च शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत शोधार्थियों

तक सीमित है। अतः अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों का सामान्यीकरण अन्य जनपदों अथवा राज्यों के संदर्भ में सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए।

2. अध्ययन में केवल 200 शोधार्थियों को प्रतिदर्श के रूप में सम्मिलित किया गया है। अतः अध्ययन के निष्कर्ष इसी प्रतिदर्श की विशेषताओं एवं उसकी प्रतिनिधिकता तक सीमित हैं।
3. अध्ययन में आँकड़ों के संकलन एवं विश्लेषण के लिए केवल मात्रात्मक उपागम का उपयोग किया गया है। गुणात्मक तथ्यों, अनुभवों तथा प्रतिभागियों के दृष्टिकोण का विस्तृत विश्लेषण इस अध्ययन के अंतर्गत सम्मिलित नहीं किया गया है।
4. अध्ययन के निष्कर्ष उत्तरदाताओं द्वारा प्रदान की गई स्व प्रतिवेदित सूचनाओं पर आधारित हैं। अतः- व्यक्तिगत धारणाओं, सामाजिक स्वीकार्यता अथवा उत्तर देने की प्रवृत्ति के कारण उत्पन्न होने वाले संभावित पूर्वाग्रहों की संभावना से पूर्णतः इंकार नहीं किया जा सकता।

भावी शोध हेतु सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्षों एवं परिसीमाओं के आधार पर भावी शोधकर्ताओं के लिए निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए जाते हैं—

1. प्रस्तुत अध्ययन केवल उत्तर प्रदेश के वाराणसी जनपद तक सीमित है। भविष्य में इसी विषय पर विभिन्न जनपदों, राज्यों अथवा राष्ट्रीय स्तर पर अध्ययन कर तुलनात्मक निष्कर्ष प्राप्त किए जा सकते हैं।
2. इस अध्ययन में केवल 200 शोधार्थियों को सम्मिलित किया गया है। भविष्य में अधिक बड़े तथा विविध प्रतिदर्श को सम्मिलित कर अध्ययन की विश्वसनीयता एवं निष्कर्षों के सामान्यीकरण को और अधिक सुदृढ़ बनाया जा सकता है।
3. प्रस्तुत अध्ययन में केवल मात्रात्मक उपागम का उपयोग किया गया है। भविष्य में मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों उपागमों के समन्वित उपयोग से विषय का अधिक व्यापक एवं गहन अध्ययन किया जा सकता है।
4. भविष्य के अध्ययनों में शोध एवं प्रकाशन नैतिकता के प्रति जागरूकता, नैतिक अनुपालन तथा संस्थागत प्रभावशीलता के साथ-साथ शोध उत्पादकता, शोध गुणवत्ता, शैक्षणिक उपलब्धि तथा शोध संतुष्टि जैसे अन्य चरों को भी सम्मिलित किया जा सकता है।
5. विभिन्न प्रकार के उच्च शिक्षण संस्थानों, जैसे विश्वविद्यालय, स्वायत्त महाविद्यालय, निजी महाविद्यालय तथा शासकीय महाविद्यालय के मध्य तुलनात्मक अध्ययन किए जा सकते हैं।
6. शोधार्थियों के साथ-साथ शोध-निर्देशकों, शिक्षकों तथा संस्थागत प्रशासकों को भी अध्ययन में सम्मिलित कर शोध एवं प्रकाशन नैतिकता के विभिन्न आयामों का अधिक व्यापक विश्लेषण किया जा सकता है।
7. भविष्य में शोध एवं प्रकाशन नैतिकता के संवर्धन हेतु आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों, जागरूकता अभियानों तथा संस्थागत नीतियों की प्रभावशीलता का प्रायोगिक अध्ययन किया जा सकता है।
8. शोध एवं प्रकाशन नैतिकता तथा नैतिक अनुपालन पर नवीन प्रौद्योगिकियों एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित साधनों के प्रभाव का अध्ययन भी भावी शोध का एक महत्वपूर्ण विषय हो सकता है।

CC BY

9. विभिन्न विषयों एवं संकायों के शोधार्थियों के मध्य शोध एवं प्रकाशन नैतिकता तथा नैतिक अनुपालन का तुलनात्मक अध्ययन कर विषयगत भिन्नताओं का विश्लेषण किया जा सकता है।
10. भविष्य में अनुदैर्ध्य अध्ययन के माध्यम से यह ज्ञात किया जा सकता है कि समय के (दीर्घकालिक) साथ शोध एवं प्रकाशन नैतिकता के प्रति जागरूकता, नैतिक अनुपालन तथा संस्थागत प्रभावशीलता में किस प्रकार परिवर्तन होता है तथा उनके मध्य संबंध किस प्रकार विकसित होते हैं।

शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर निम्नलिखित शैक्षिक निहितार्थ प्रतिपादित किए गए हैं –

1. शोधार्थियों में शोध एवं प्रकाशन नैतिकता के प्रति जागरूकता विकसित करने के लिए उच्च शिक्षण संस्थानों में समय-समय पर प्रशिक्षण कार्यक्रमों, अभिमुखीकरण (ओरिएंटेशन) कार्यक्रमों तथा विचार-विमर्श सत्रों का आयोजन किया जाना चाहिए।
2. शोध कार्यों में नैतिक सिद्धांतों का पूर्णतः अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए प्रत्येक शोधार्थी को शोध प्रारम्भ करने से पूर्व शोध एवं प्रकाशन नैतिकता से संबंधित आवश्यक ज्ञान, प्रशिक्षण तथा मार्गदर्शन प्रदान किया जाना चाहिए।
3. जिन संस्थानों में संस्थागत प्रभावशीलता अपेक्षाकृत कम है, वहाँ शोध संबंधी नीतियों, संसाधनों तथा शैक्षणिक वातावरण को अधिक सुदृढ़ बनाया जाना चाहिए।
4. विश्वविद्यालयों में अपनाई जा रही प्रभावी शोध प्रक्रियाओं एवं व्यवस्थाओं को अन्य उच्च शिक्षण संस्थानों में भी लागू करने का प्रयास किया जाना चाहिए, जिससे सभी संस्थानों में शोध की गुणवत्ता एवं विश्वसनीयता में वृद्धि हो सके।
5. प्रत्येक उच्च शिक्षण संस्थान में शोध एवं प्रकाशन नैतिकता के अनुपालन की निगरानी तथा मार्गदर्शन हेतु एक सक्षम समिति का गठन कर उसे प्रभावी रूप से कार्यशील बनाया जाना चाहिए।
6. शोध-निर्देशकों एवं पर्यवेक्षकों को समय-समय पर शोध एवं प्रकाशन नैतिकता, शोध की गुणवत्ता तथा नवीन शैक्षणिक आवश्यकताओं से संबंधित प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए, जिससे वे शोधार्थियों का प्रभावी एवं नैतिक मार्गदर्शन कर सकें।
7. उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रमों में शोध एवं प्रकाशन नैतिकता, शैक्षणिक ईमानदारी तथा उत्तरदायी शोध व्यवहार से संबंधित विषयों को अनिवार्य रूप से सम्मिलित किया जाना चाहिए।
8. शोध कार्यों की मौलिकता सुनिश्चित करने तथा अनुचित प्रतिलिपि (प्लेगरिज़्म) की प्रवृत्ति को रोकने के लिए प्रभावी जाँच एवं निगरानी व्यवस्था विकसित की जानी चाहिए।
9. शोधार्थियों में सत्यनिष्ठा, उत्तरदायित्व, पारदर्शिता तथा नैतिक मूल्यों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने हेतु निरंतर शैक्षिक, प्रशिक्षणात्मक एवं प्रेरणात्मक गतिविधियों का आयोजन किया जाना चाहिए।
10. अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ है कि शोध एवं प्रकाशन नैतिकता के प्रति जागरूकता, नैतिक अनुपालन तथा संस्थागत प्रभावशीलता परस्पर घनिष्ठ रूप से संबद्ध हैं। अतः उच्च शिक्षण संस्थानों में ऐसी शैक्षिक एवं

प्रशासनिक व्यवस्थाओं को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, जो नैतिक, गुणवत्तापूर्ण, पारदर्शी एवं उत्तरदायी शोध संस्कृति के विकास में सहायक हों।

संदर्भ सूची

- आवस्थी, एस., एवं त्रिपाठी, एम (2022). भारतीय विश्वविद्यालयों में प्लेगरिज़्म जागरूकता और शोध नैतिकता प्रथाएँ। *जर्नल ऑफ अकादमिक एथिक्स*, 20(3), 215–230
- कोप (COPE) (2021). प्रकाशन नैतिकता के लिए मूल प्रथाएँ एवं दिशानिर्देश। *कमेटी ऑन पब्लिकेशन एथिक्स*. https://publicationethics.org
- गुप्ता आर, (2020). उच्च शिक्षा में "प्रकाशित करो या समाप्त हो जाओ" संस्कृति और इसका शोध ईमानदारी पर प्रभाव। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल डेवलपमेंट*, 45(2), 88–97
- जॉनसन, एल., स्मिथ, पी., एवं ब्राउन, के. (2023). शैक्षणिक शोध में संस्थागत संस्कृति और नैतिक व्यवहार। *जर्नल ऑफ हायर एजुकेशन एथिक्स*, 18(1), 55–72
- कुमार, ए., एवं सिंह, आर. (2019). भारत में डॉक्टरेट शोधार्थियों में शोध नैतिकता की जागरूकता। *इंडियन जर्नल ऑफ हायर एजुकेशन*, 12(4), 102–118
- शर्मा, पी., एवं वर्मा, एन. (2020). शोधार्थियों के बीच प्लेगरिज़्म और अकादमिक ईमानदारी एक : अनुभवजन्य अध्ययन। *जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड प्रैक्टिस*, 11(2), 134–150
- विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC). (2018). उच्च शिक्षण संस्थानों में अकादमिक ईमानदारी को बढ़ावा देना एवं प्लेगरिज़्म की रोकथाम संबंधी विनियम। नई दिल्ली : यूजीसी
- विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC). (2023). शोध एवं प्रकाशन नैतिकता (RPE) दिशानिर्देश एवं कार्यान्वयन रिपोर्ट। नई दिल्ली : यूजीसी
- सिंह, वी., एवं कुमार, एस. (2019). भारत में विश्वविद्यालय शोधार्थियों के बीच शोध नैतिकता की जागरूकता। *जर्नल ऑफ एजुकेशनल स्टडीज*, 15(3), 77–92
- त्रिपाठी, आर., एवं आवस्थी, एस. (2024). भारतीय उच्च शिक्षा संस्थानों में प्लेगरिज़्म पहचान उपकरणों की प्रभावशीलता। *एजुकेशन एंड इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजीज*, 29(1), 45–63
- विश्व अनुसंधान ईमानदारी सम्मेलन। (2020)। शोध ईमानदारी पर सिंगापुर घोषणा-पत्र। https://wcrif.org
- रेसनिक, डी. बी. (2020)। शोध में नैतिकता क्या है और यह क्यों महत्वपूर्ण है? *नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एनवायरनमेंटल हेल्थ साइंसेज*। https://www.niehs.nih.gov
- स्टेनेक, एन. एच. (2019)। उत्तरदायी शोध आचरण का परिचय। *ऑफिस ऑफ रिसर्च इंटीग्रिटी*
- फेनेली, डी. (2018)। मत: क्या विज्ञान वास्तव में पुनरुत्पादन संकट का सामना कर रहा है? *प्रोसीडिंग्स ऑफ द नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेज*, 115(11), 2628–2631
- टाइटस, एस. एल., वेल्स, जे. ए., एवं रोड्स, एल. जे. (2019)। शोध ईमानदारी को सुधारना। *नेचर*, 453(7198), 980–982।